डिजीटल पत्र

कांग्रेस दर्पण

बिहार

दैनिक

पटना, 12 मार्च, रविवार, 2023

संपादक की कलम से

हमारे कांग्रेस कार्यकर्तागण हम अपने तमाम जिला अध्यक्षों, प्रखंड अध्यक्षों और तमाम कार्यकर्ता से निवेदन करते है कि कांग्रेस दर्पण में अपने जिले और प्रखंड अस्तर की खबर को भेजें जिसे हम प्रमुखता से स्थान देते है, यहां कोई भी छोटा और बड़ा नहीं समझा जाता। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी को एक ताकतवर अध्यक्ष प्राप्त हुआ है और ऐसे में हम कार्यकर्ताओं की जवाबदेही है कि कांग्रेस से जुड़ी हर बात की जानकारी माननीय अध्यक्ष और तमाम कार्यकर्ताओं तक पहुंचाएं। कांग्रेस दर्पण जिसमें एक सशक्त माध्यम है। आज के इस डिजिटल दुनिया में कांग्रेस दर्पण का निर्माण कार्यकर्ताओं को मजबूती प्रदान करने की एक पहल है अकबर इलाहाबादी ने कहा था-

'ना बम निकालो ना तलवार निकालो जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो'

-डॉ0 संजय कुमार,
संपादक, कांग्रेस दर्पण सह काँग्रेस कार्यकर्ता। संपर्क -8252667278

डा. अखिलेश ने कहा कि बिहार में कांग्रेस के लिये असीम संभावनायें हैं। ज़रूरत है इन संभावनाओं पर काम करने की। आगामी लोकसभा चुनाव हमारे लिये एक बड़ी चुनौती है और हमें इस चुनौती के लिये तैयार होना होगा।

बिहार कांग्रेस के राजनीतिक मामलों की समिति एक मज़बूत, दक्ष एवं अनुभवी टीम: प्रदेश अध्यक्ष

पटना। कांग्रेस दर्पण

पटना: आज दिनांक 11 मार्च, 2023 को बिहार कांग्रेस राजनीतिक मामलों की समिति की बैठक सदाक़त आश्रम में केरल के पूर्व राज्यपाल श्री निखिल कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में प्रदेश अध्यक्ष डा. अखिलेश प्रसाद सिंह, श्री तारीक अनवर, डा. मदन मोहन झा , चंदन बागची, श्यामसुन्दर सिंह धीरज, डा. शकील अहमद खान, विजय शंकर दूबे, डा समीर सिंह, चंदन यादव, तौकिर आलम, अशोक राम, कौकब क़ादरी, कृपानाथ पाठक, नरेंद्र सिंह, श्रीमती ज्योति, प्रमोद सिंह, कपिलदेव यादव, चंद्रिका यादव, रामायण यादव, समीर कुमार सिंह , अर्जुन मॉडल आदि सदस्य उपस्थित रहे।

बैठक में मुख्यरूप से पार्टी को कैसे मज़बूती प्रदान की जाय इस संदर्भ में सभी वरीय नेताओं ने अपनी अपनी बात रखी। अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री निखिल कुमार जी ने कहा कि आज कांग्रेस को ज़िले से लेकर राज्य तक मज़बूत करनें की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि संगठन मज़बूत होगा तभी कांग्रेस अपने पाँव पर खड़ी होगी। उन्होंने कहा कि हमें 2024 के आम चुनाव में कांग्रेस की भूमिका भी तय करनी होगी। प्रदेश अध्यक्ष डा अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि बिहार कांग्रेस के राजनीतिक मामलों की समिति एक मज़बूत, दक्ष एवं अनुभवी टीम है। हमें इनकी दक्षता एवं अनुभव का लाभ मिलेगा। इनके दिये गये सुझाव एवं सलाह पार्टी को मज़बूती ही प्रदान करेगी। हमारा इनसे अनुरोध है कि पार्टी हित में समय समय पर प्रदेश कांग्रेस को सुझाव देते रहें और मेरा प्रयास रहेगा कि इनके सुझावों पर ईमानदारी से अम्ल करें। डा. अखिलेश ने कहा कि बिहार में कांग्रेस के लिये असीम संभावनायें हैं। ज़रूरत है इन संभावनाओं पर काम करनें की ।आगामी लोकसभा चुनाव हमारे लिये एक बड़ी चुनौती है और हमें इस चुनौती के लिये तैयार होना होगा। भाजपा की सरकार ईडी, सीबीआई एवं इंक्मटैक्स को अपने चुनावी हथियार की तरह उपयोग कर रही है। इनके माध्यम से विपक्ष को कुचलने का प्रयास हो रहा है। लेकिन जनता सब देख रही है। भाजपा सरकार के इस अपराध को क्षमा नही मिलनेवाला है। चाहे कितना भी दमन करवे हम भाजपा के ख़िलाफ़ लड़ते रहे थे, लड़ते रहे हैं और लड़ते रहेंगे।हमारी प्राथमिकता है कि ज़िलों को पुनर्गठित किया जाय, जो शीघ्र ही होगा एवं उसके बाद प्रदेश कमिटी का गठन होगा।

केरल के राष्ट्रीय प्रभारी श्री तारीक अनवर ने कहा कि एकता में शक्ति है, हमें एक होकर भाजपा के कुचक्रों का सामना करना पड़ेगा।

इस अवसर पर डा मदन मोहन झा ने कहा कि आज पार्टी एक मजबूर हाथों में है और पार्टी को अपने नये अध्यक्ष से बहुत उम्मीद है। इनके अलावे डा. शकील अहमद खान, विजय शंकर दूबे, कृपानाथ पाठक, नरेंद्र कुमार , चंद्रिका यादव, रामायण यादव, श्यामसुन्दर सिंह धीरज, अशोक राम, कपिलदेव यादव, तौकिर आलम आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

सधन्यवाद

कच्चे तेल की कीमतें कम...फिर भी जनता से लूट जारी है

पटना। कांग्रेस दर्पण

कच्चे तेल की कीमतें कम...फिर भी जनता से लूट जारी है। अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में कच्चे तेल की कीमतें कम होने का फायदा जनता को नहीं मिल रहा है, क्योंकि भारत में 'मोदी जी की सरकार' है– जो मित्रों के लिए तो सारे नियम–कानून–कायदे ताक पर रख देगी, मगर जनता को कोई राहत नहीं देगी।

तेल का ही खेल देख लीजिए– पिछले 10 माह में कच्चे तेल की कीमतों में लगभग 30% गिरावट आई। ऐसे में तेल कम्पनियां 16 लाख बैरल सस्ते क्रूड ऑयल की रूस से रोज खरीद कर रही है। भारतीय तेल कंपनियां रूस से 13 डॉलर सस्ता कच्चा तेल खरीद रही है। पिछले 10 माह में क्रूड ऑयल की कीमतें 12 रुपए प्रति लीटर कम हुई है। ऐसे में पेट्रोल–डीजल की कीमतें भी कम होनी चाहिए थी, लेकिन जनता के सिर पर बढ़ी कीमतों का बोझ जस का तस बना हुआ है। मोदी सरकार ने जनता को कर्ज तले दबाने का पूरा मन बना लिया है। अपने चहेतों के लिए नियमों में छूट देने वाले पीएम मोदी जनता से हो रही लूट पर मौन हैं...शायद

सहमत हैं! मध्यम वर्गीय परिवारों को मोदी सरकार से कोई राहत नहीं मिली। अप्रैल 2022 में क्रूड ऑयल की कीमतें 102 डॉलर प्रति बैरल थी, जो घटकर दिसंबर 2022 में 78.1 डॉलर प्रति बैरल हो गई थी, लेकिन मोदी जी के कान पर जनता को रियायत देने की जूं तक नहीं रेंगी। मोदी सरकार जनता पर महंगाई थोपकर बर्बादियों का जश्न मना रही है।

देश की जनता यह अत्याचार देख रही है, समय आने पर जवाब देगी

पटना। कांग्रेस दर्पण

चुनाव आते नहीं कि ED CBI जैसी एजेंसियों को भाजपा सरकार विपक्ष की आवाज दबाने के लिए छोड़ देती है।

प्रधानमंत्री जी के मित्र पर लाखों करोड़ के घोटाले के आरोप लगे हैं, उनपर ये एजेंसियां कार्रवाई क्यों नहीं कर रही हैं? भाजपा के भगोड़े मित्र देश का हजारों करोड़ लेकर उड़ गए, तब ये एजेंसियां कहां थीं? अगर कोई नेता भाजपा ज्वाइन कर ले तो जांच तुरंत बंद हो जाती है। मेघायल में जिस पार्टी को 'सबसे भ्रष्ट' बता रहे थे, उसी के साथ सरकार बना ली और प्रधानमंत्री जी खुद आशीर्वाद देने पहुंचे। कर्नाटक में भाजपा विधायक के घर से 8 करोड़ कैश मिला, उसे अगले ही दिन जमानत मिल गई। 40% कमीशन के लिए बदनाम कर्नाटक की भाजपा सरकार में किसके खिलाफ कार्रवाई हुई? उत्तराखंड और गुजरात जैसे भाजपा की सरकारों वाले राज्यों में भ्रष्टाचार के मामले सामने आये, किसके खिलाफ कार्रवाई हुई? देश की जनता यह अत्याचार देख रही है, समय आने पर जवाब देगी।

बिहार में विपक्षी एकता को तोड़ने की कोशिश में लगी हुई है बीजेपी

पटना । कांग्रेस दर्पण

केंद्र सरकार सी बी आई एवं ईडी के जरिये देश एवं खासकर बिहार में विपक्षी एकता को तोड़ने की कोशिश में लगी हुई है।पूरे देश में जिस प्रकार विपक्षी दलों के नेताओं के घर छापेमारी कर रही है उससे लगता प्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री के इशारे पर की जा रही है।सी बी आई का प्रयोग कर विपक्षी एकता को तोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।जो असफल सिद्ध होगा।2024में होने वाले चुनाव में अपनी सुनिश्चित हार से भाजपा में बौखलाहट है इसलिए संबैधानिक संस्थाओ का गलत इस्तेमाल कर रही है।सब कोई जानते हैं कि जो केस15वर्ष पूर्व बंद हो चुका है उसे फिर से कुरुदना इसका परिचायक है।अभी अभी अपना किडनी प्रत्यारोपण करा कर आये लालू यादव पर दिवस सम्वेदना हीन होने का परिचायक है।

-सुरेश प्रसाद यादव, अध्यक्ष, बिहार प्रदेश इंडियन कांग्रेस ब्रिगेड।

भारतीय संविधान की गरिमा को बनाए रखना ही कांग्रेस पार्टी का उद्देश्य है: अमित

पटना । कांग्रेस दर्पण

भारतीय संविधान लिखने वाली सभा में 299 सदस्य थे जिसके अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे। प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा भारतीय संविधान के सुलेखक थे। भीमराव अंबेडकर को निर्मात्री समिति का अध्यक्ष चुना गया था।

यह जानकारी देश के हर एक नागरिक को होनी चाहिए । आज की इस प्रोपेगेंडा की राजनीति में हमें यह सच्चाई छुपाकर संविधान को भी जाती गत रंग देने का प्रयास किया जा रहा है। किसके आड़ में आपसी सौहार्द को भी बिगाड़ने की कोशिश होती है। भारतीय संविधान कांग्रेस के द्वारा देश हित में बोया गया एक बीज था। जिसके छांव तले शांति और सौहार्द भाईचारे से जुड़ा विकसित देश की कल्पना कि गयी थी। लेकिन आज राजनीतिक स्वार्थ साधने की कोशिश में इसके मूल को ही नष्ट किया जा रहा है। संविधान कांग्रेस के द्वारा देश जोड़ने की कल्पना थी। संविधान कमेटी के सदस्यों

की जातियों को चुन कर खुले मंच से हम उनका अवहेलना करते हैं। ऐसा जो भी करता है उन्हें संविधान और देश से कोई मतलब नहीं है उन्हें सिर्फ अपनी राजनीति रोटी सेकने से मतलब है। वास्तव में अगर उन कमेटी के सदस्यों की जाती देखा जाए तो वह सिर्फ देशभक्त थे, भारतीय थे, स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्हें जातियों के रंग में रंग के उनका तिरस्कार करने का अधिकार किसी को भी नहीं मिलना चाहिए। कांग्रेस भारतीय संविधान की गरिमा के लिए कल भी वचनबद्ध था और आज भी वचनबद्ध है और आगे भी रहेगा। देश की गरिमा ही कांग्रेस का मूल है। केंद्र सरकार के द्वारा संवैधानिक संस्थानों का दुरुपयोग करना भी उसी गरिमा का हनन है । भारत जोड़ो यात्रा उसी गरिमा को बचाने का एक प्रयास था देश में सौहार्द लाने का प्रयास था। देश के जनता को यह बताने का प्रयास था, कि जो आपके विकास तरक्की और आपके अधिकारो की रक्षा के लिए बनाए गए संविधान को कैसे नष्ट किया जा रहा है। यह बताने का प्रयास था कि सत्ता में बैठा केंद्र सरकार सत्ता के नशे में मदमस्त हो गया है, अब इन्हे जनता का हित दिखाई नहीं देता, सिर्फ कुछ स्वजनों का हित दिखाई देता है। देश और संविधान की गरिमा बनाए रखने की लड़ाई कांग्रेस पार्टी हमेशा लड़ती रहेगी।

-अमित कुमार, बिहार प्रदेश कांग्रेस

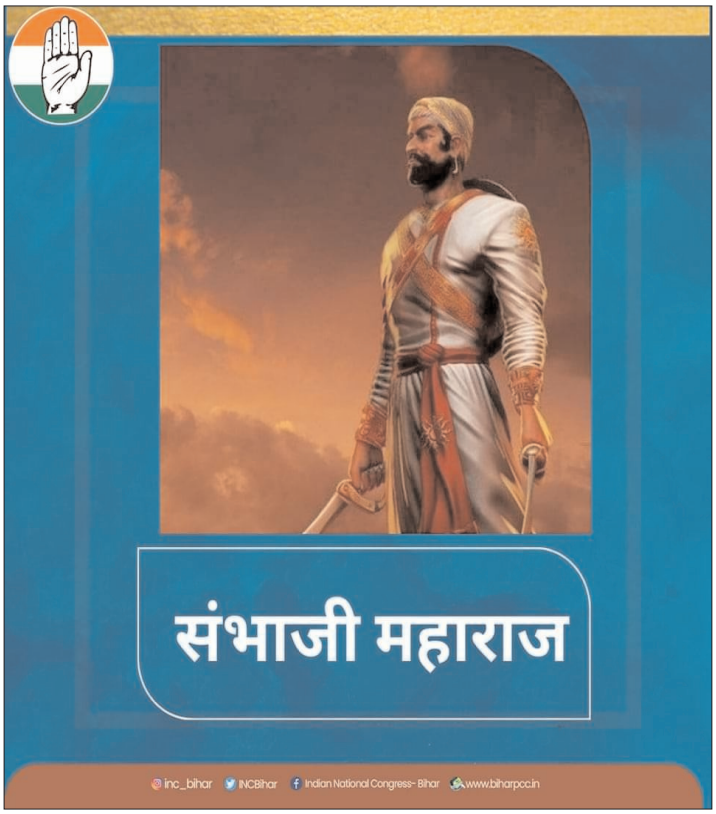

जुब्बा सहनी के प्रतिमा पर मीनापुर के कांग्रेसी नेताओं ने पुष्प और माल्यार्पण किया

पटना। कांग्रेस दर्पण

आज दिनांक 11/03/2023 को मीनापुर के चैनपुर गाँव स्थित और प्रखण्ड मुख्यालय के निकट स्थित अमर शहीद जुब्बा सहनी के आदम कद प्रतिमा पर मीनापुर के कांग्रेसी नेताओं के द्वारा उनके शहादत दिवस के अवसर पर पुष्प और माल्यार्पण अर्पित किया गया कांग्रेस के प्रखण्ड अध्यक्ष अजित कुमार सिन्हा ने अमर शहीद जुब्बा सहनी के व्यतित्व व कृतित्व पर बिस्तार से चर्चा की और कहा कि आज़ादी की लड़ाई मे उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता ' अंग्रेज़ो के द्वारा उन्हें जेल मे कठोर यातनाएं देते हुए आज ही के दिन 11 मार्च को फांसी दी गई थी, मीनापुर के साथ साथ उन्होंने पुरे देश को आजादी के लिए अपनी आहुति देकर संदेश दिया था,उनसे प्रेरणा लेकर कई क्रान्तिकारी आगे बढ़ कर देश को आजादी दिलाई वैसे वीर सपूत को मै नमन करता हूँ इस कार्यक्रम के अवसर पर प्रखण्ड उपायक्ष वीरेंद्र कुमार पंडित, अर्जुन कुशवाहा, विजय कुमार यादव, सतार अंसारी, रहमत खान आदि दर्जनों नेता गण उपस्थित थे '

देश के असली मुद्दे से भटकाने के लिए अनर्गल व्यान बाजी कर रहे हैं भाजपा के लोग

पटना । कांग्रेस दर्पण

आज देश के जनता को चाहिए रोजगार और कमरटोर मंहगाई से राहत अच्छी शिक्षा बेहतर स्वास्थ्य व्यवस्था लेकिन केंद्र सरकार उसका उल्टा करने मे लगी है मोदी जी सिर्फ 1% लोगो के लिए प्रधानमंत्री रह गये है जो उनकी पार्टी को फंड करती है वह उन्ही लोगो का कर्जा माफ करने मे लगे है 99%लोगो का उन्हे फिक्र नही इसी लिए श्री राहुल गांधी जी जनता की हित के लिए अबाज बुलंद कर रहे है असली मुद्दे को देश के सामने रख रहे है और भाजपा के लोग और गोदी मीडिया नही जाते की जनता की हित की कोई बात करे इस लिए राहुल गांधी जी पर अनर्गल व्यान बाजी करने मे लगा रहता है लेकिन जनता समझ चुका है की भाजपा सिर्फ जुमले बाज पार्टी है और 2024 मे इस सरकार को उखाड फेंके गी

रवि गोल्डन कुमार
प्रदेश उपाध्यक्ष OBC विभाग

CBI,ED,IT के जरिए तमाम विपक्षियों पे होगा प्रहार।
सोच लिया है ठग,यही प्रोपगंडाओं से जीतूंगा हर बार।
पर याद कर रे मूर्ख,इंदिरा की हुई थी इसी कारण हार।
जेल जाते ही नेताओं का, बढ़ जायेगा जनमत अपार।
-दिनेश शंकर दास,BPCC

जातिगत राजनीति करने वाले को जेड प्लस सुरक्षा मुहैया कराई जा रही है

पटना । कांग्रेस दर्पण

जिस गांधी परिवार ने देश खातिर बलिदानी दी थी उससे एसपीजी सुरक्षा छीना गया था.....और आज जातिगत राजनीति करने वाले को जेड प्लस सुरक्षा मुहैया कराई जा रही है।

जिनके बिहार आते ही जनता सहम जाती है, भला उनको किस से इतना खतरा है कि सुरक्षा बढ़ाई जा रही है। ऐसा भाजपा नेता सुशील मोदी बिहार के उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव को जेड प्लस सुरक्षा मिलने पर तंज कसते हुए बोले थे।जेड प्लस की सुरक्षा अभी बिहार में राज्यपाल, मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री पूर्व लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार, सहित 16 नेताओं को प्राप्त है। लेकिन यह सुरक्षा मोदी जी के अभिन्न मित्र अंबानी परिवार को भारत और विदेश में सबसे ज्यादा मिली हुई है। अब जबकि बिहार में लोकसभा चुनाव नजदीक है, तो नीतीश कुमार एवम तेजस्वी यादव के राजनीतिक विरोधियों को जेड प्लस, वाई प्लस की सुरक्षा मुहैया कराई जा रही है।जेडीयू से अलग होते ही उपेंद्र कुशवाहा जो केवल और केवल कुशवाहा विरादरी का नेतागिरी करते हैं, उन्हें जेड प्लस सुरक्षा केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से मिल गई। मुकेश साहनी जिनके डायरी में मल्लाह छोर कर कुछ अंकित नही है को इसलिए जेड प्लस की सुरक्षा दी गई लोकसभा चुनाव में मल्लाहों का वोट बेजेपी को उपलब्ध करवाए।अशोक चौधरी, उदय नारायण चौधरी इन लोगों को जेड प्लस की सुरक्षा उपलब्ध

है। कांग्रेस के नेता डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह जो राज्यसभा सदस्य के साथ-साथ कॉंग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष भी हैं, और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मदन मोहन झा को वाई श्रेणी की सुरक्षा प्राप्त है। जेड प्लस की सुरक्षा 24 घंटे दो अंग रक्षक के अलावा हाउस गार्ड और 25 से 40 के बीच जवान तैनात रहते हैं। मोदी सरकार तेजस्वी यादव को परेशान करने के लिए उसके घर ईडी का पहरा दिलवा रही है। ईडी उनकी पत्नी (जो गर्भवती हैं, स्वास्थ्य लाभ की उन्हें जरूरत है)उनकी बहन से घण्टों पूछताछ कर परेशान कर रही है। तो निश्चित रूप से मोदी देश के प्रधानमंत्री के रूप में कम भाजपा के कार्यकर्त्ता के रूप में ज्यादा काम कर रहे हैं। जो लोकतंत्र के लिए सही नहीं है

-रणजीत कुमार मुखिया जी पूर्व जिला सचिव बेगूसराय कांग्रेस कमेटी

हनुमान और नन्दी से परेशानी

पटना । कांग्रेस दर्पण

आज तारापुर विधानसभा क्षेत्र का दो सामाचार प्रमुखता से सभी अखबारों में छाया रहा । पहला समाचार तारापुर बाजार में हनुमानजी क्रोधित हो उठे और दर्जनों लोगों को जख्मी कर दिए तो खडगपुर बाजार में तीन चार नन्दी महराज ने अनेक लोगों को जख्मी कर दिया।

हनुमानजी और नन्दी महराज को भारत की एक राजनीतिक दल खूब भंजा रहा है और उनके नाम पर एक संगठन भी खडा कर रखा है जो आजकल खूब चर्चा में है ,आपने भी बजरंग दल का नाम सुना होगा और जो नन्दी (सांढ) अथवा इनके वंश के किसी भी सदस्य को बचाने के नाम पर जय श्री राम के जयघोष के साथ मारकाट करने में जरा भी देर नहीं करते हैं ।

तारापुर में मेरे एक अधिवक्ता मित्र भी बजरंगबली के कोप का भाजन बने , जख्मी हालत में जब उनका तश्वीर अखबारों में देखा तो बडा दुख हुआ । बजरंग दल के चहेतों की सरकार न सिर्फ केन्द्र में है बल्कि भारत के अधिकांश प्रदेशों में भी है लेकिन कहीं भी न तो बजरंगबली के खाने पीने की व्यवस्था है और न तो नन्दी महराज के लिए । यूपी बाले बाबा नन्दी के नाम पर कुछ दिखावा कर रहे हैं लेकिन सच्चाई यही है कि यूपी में भी नन्दी महराज भूखे प्यासे सडकों पर भटक रहे हैं । गांव घर में तो बजरंगबली और नन्दी महराज को थोडा भोजन पानी मिल जाता है लेकिन जब ये शहरों और कस्बों का रुख कलते हैं तो भूख की तडप से मन क्रोधित हो उठता है और आदमी को ही अपना शिकार बना लेता है ।

गौ वंश के नन्दी की समस्या दिनानुदिन गंभीर होती जा रही है । मशीनीकरण के दौड में बेचारे बैल की उपयोगिता समाप्त हो गई है और किसान नन्दी को यूं ही आबारा छोड देने को मजबूर हो गए हैं । यही नन्दी गांव मे फसल को बर्बाद करते हैं तो शहर जाकर जानलेवा हो जाते हैं । हनुमानजी का भी वही हाल है ।

वन क्षेत्र में लगातार ह्रास होते जा रहा है और जो वन हैं वहां भी फलदार पेड नाम मात्र के रह गये हैं तो स्वभाविक है बंदर भालू हनुमान शहर की ओर आयेंगे ही ।

छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार द्वारा जो गोपालकों से गोबर खरीद की योजना है वह बहुत ही लाभकारी और गौवंश की रक्षा का सर्वश्रेष्ठ उपाय है । सरकार सहकारिता के माध्यम से यदि गांव में कस्बों में और शहरों के पडोस में बसे गावों में बृहद पैमाने पर

वायो गैस प्लांट या गोबर गैस प्लांट स्थापित कर किसानों को गोबर का उचित मूल्य दे तो किसान भी समृद्ध होगा और गौवंश की रक्षा भी होगी तथा ऊर्जा और उर्वरक भी मिलेगा। कांग्रेस की सरकार द्वारा गौरक्षा और गौ बध रोकने के अनेकों सार्थक प्रयास किए गये लेकिन केन्द्र में जब से गाय पर राजनीति करनेवाले की सरकार बनी है तभी से भारत गौमांस का सबसेबड़ा निर्यातक देश हो गया है। गौवंश की तश्करी में बेतहाशा वृद्धि हो गई है झूंड के झूंड गौवंशों को बांग्लादेश की ओर ले जाते हुए कोई भी और कहीं भी देख सकता है ।

सरकार को छोटे छोटे जंगली जानवरों को भी खाने पीने की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि प्राकृतिक संतुलन बना रहे ।इसके लिए वन क्षेत्र का विकास करना होगा नदी झील ताल तलैया को बढाना होगा तभी जंगली जानवरों का शहर की ओर आना रुकेगा तथा शहरवासी चैन से रह सकेंगे । इसके लिए व्यापक सोच वाली सरकार जरूरी है जो हर छोटी बडी समस्याओं पर पैनी नजर रखे और जिसके सोच के केन्द्र में किसनों का विकास हो और किसानों का विकास तभी संभव है जब जंगल जमीन और जल विकसित होंगे ।

आप सभी जानते हैं कि किसानों का हित संवर्द्धन सिर्फ और सिर्फ कांग्रेस के ही सरकार में हो सकता है । भाजपा की सरकार सिर्फ पूंजीपतियों के हाथों की कठपुतली है उससे आप अपने जीवन के बेहतरी की कल्पना नहीं कर सकते हैं।

-अजय कुमार झा, कांग्रेस नेता, 164 तारापुर विधानसभा क्षेत्र, (मुंगेर) बिहार ।

बगहा विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी जयेश सिंह के अध्यक्षता में हुए आज बगहा में कार्यक्रम में सैकड़ों लोगो ने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण किया। आज हुए इस कार्यक्रम में 29 पंचायत में अतिपिछड़ा अध्यक्ष का चयन हुआ और पूरी निष्ठा के साथ पार्टी को मज़बूत करने का संकल्प लिया ।

कल से कांग्रेस उद्घटके प्रतिनिधिमंडल में मैं त्रिपुरा में चुनाव बाद हिंसा के शिकार इलाक़ो का जायज़ा लेने गई हूं। वहां की दशा देख ऐसा लगता है जैसे यह भारत नही,सोमालिया हो! जहां लोकतंत्र, क़ानून, न्याय, प्रशासन, निष्पक्ष चुनाव का नामोनिशान न हो! अराजकता सर्वव्यापी है! #Ranjeet Ranjan

खत्म हो जाएंगे मिटाने का सपना देखने वाले, अड़ी रहेगी कांग्रेस, खड़ी रहेगी कांग्रेस

पटना। कांग्रेस दर्पण

कांग्रेस की स्थापना ब्रिटिश राज में 28 दिसंबर 1885 में हुई थी । इसके संस्थापकों में ए0 ओ0 ह्यूम (थियिसोफिकल सोसाइटी के प्रमुख सदस्य), दादा भाई नौरोजी और दिनशा वाचा शामिल थे। 19वीं सदी के आखिर में और शुरूआती से लेकर मध्य 20वीं सदी में, कांग्रेस भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में, अपने 1.5 करोड़ से अधिक सदस्यों और 7 करोड़ से अधिक प्रतिभागियों के साथ, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरोध में एक केन्द्रीय भागीदार बनी।

1947 में आजादी के बाद, कांग्रेस भारत की प्रमुख राजनीतिक पार्टी बन गई । आजादी के बाद 16 आम चुनावों में से, कांग्रेस ने 6 में पूर्ण बहुमत जीता हैं और 4 में सत्तारूढ़ गठबंधन का नेतृत्व किया। कुल 49 वर्षों तक वह केन्द्र सरकार का हिस्सा रही। कांग्रेस के सात प्रधानमंत्री रह चुके हैं; पहले जवाहरलाल नेहरू (1947–1964) थे और हाल ही में मनमोहन सिंह (2004–2014) थे। 2014 के आम चुनाव में कांग्रेस ने आज़ादी से अब तक का सबसे ख़राब आम चुनावी प्रदर्शन किया और 543 सदस्यीय लोक सभा में केवल 44 सीट जीती। हालांकि 2019 के चुनावों में यह आंकड़ा कुछ बढ़ा लेकिन तिहरे अंक तक पहुंचने में वह फिर भी असफल रही।

ये हमारे देश की सबसे बड़ी व सर्वाधिक समय तक देश में सत्ताधारी रही कांग्रेस पार्टी का संक्षिप्त इतिहास है और भविष्य के गर्भ में क्या क्या छुपा है ,ये तो आने वाली पीढ़ियाँ देखेंगी ।किन्तु अब की पीढ़ियाँ फ़िलहाल कांग्रेस का अंधकारमय वर्तमान देख रही हैं और सोच रही हैं कि कांग्रेस ख़त्म हो गयी है। क्योंकि फिलवक्त भारत में "मोदी युग "चल रहा है और मोदी इस समय कांग्रेस मुक्त भारत का बीड़ा उठाए हुए हैं। सोलहवीं लोकसभा के चुनावों के समय नरेन्द्र मोदी ने 'कांग्रेस मुक्त भारत' का नारा दिया जो काफी प्रभावी रहा। चुनावों में कांग्रेस की सीटें मात्र 44 पर आकर सिमट गयीं ।जिसे विपक्षी दल का दर्जा भी प्राप्त नहीं हुआ। यही हाल 2019 के लोकसभा चुनाव में भी रहा।

ऐसा नहीं है कि मोदी ये बीड़ा उठाने वाले पहले भारतीय हैं।देश को अपनी तरफ से हर काम में यह दिखाने वाले मोदी कि "वे ही हैं जिनके समय में देश यहाँ नंबर वन और वहाँ नंबर वन "स्वयं कांग्रेस से देश को मुक्ति का सपना दिखाने में पिछड़ गए और स्वयं दूसरे नंबर पर रह गए क्योंकि उनसे पहले यह सपना राम मनोहर लोहिया भी भारतीयों को यह सपना दिखा चुके थे ।राम मनोहर लोहिया लोगों को आगाह करते आ रहे थे कि देश की हालत को सुधारने में कांग्रेस नाकाम रही है। कांग्रेस शासन नये समाज की रचना में सबसे बड़ा रोड़ा है। उसका सत्ता में बने रहना देश के लिये हितकर नहीं है। इसलिये लोहिया ने नारा दिया – ₹कांग्रेस हटाओ, देश बचाओ।₹

1967 के आम चुनाव में एक बड़ा परिवर्तन हुआ। देश के 9 राज्यों – पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, केरल, हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश में गैर कांग्रेसी सरकारें गठित हो गयीं। लोहिया इस परिवर्तन के प्रणेता और सूत्रधार बने।लेकिन लोहिया का यह सिलसिला यहीं थम भी गया क्योंकि 1971 के आम चुनाव में इंदिरा गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस फिर से सत्तासीन हो गयी और वह भी 518 में से 352 सीट के प्रचंड बहुमत से जबकि बहुमत के लिए केवल 260 सीट ही चाहिए थी ।

स्वतंत्रता से पूर्व भी कांग्रेस का गौरवशाली इतिहास रहा है ।भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 72 प्रतिनिधियों की उपस्थिति के साथ 28 दिसम्बर 1885 को बॉम्बे के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में हुई थी। इसके संस्थापक महासचिव (जनरल सेक्रेटरी) ए ओ ह्यूम थे जिन्होंने कलकत्ते के व्योमेश चन्द्र बनर्जी को अध्यक्ष नियुक्त किया था। अपने शुरुआती दिनों में कांग्रेस का दृष्टिकोण ए क कुलीन वर्ग की संस्था का था। इसके शुरुआती सदस्य मुख्य रूप से बॉम्बे और मद्रास प्रेसीडेंसी से लिये गये थे। कांग्रेस में स्वराज का लक्ष्य सबसे पहले बाल गंगाधर तिलक ने अपनाया था।

1907 में कांग्रेस में दो दल बन चुके थे – गरम दल एवं नरम दल। गरम दल का नेतृत्व बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय एवं बिपिन चंद्र पाल (जिन्हें लाल–बाल–पाल भी कहा जाता है) कर रहे थे। नरम दल का नेतृत्व गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता एवं दादा भाई नौरोजी कर रहे थे। गरम दल पूर्ण स्वराज की माँग कर रहा था परन्तु नरम दल ब्रिटिश राज में स्वशासन चाहता था। प्रथम विश्व युद्ध के छिड़ने के बाद सन् 1916 की लखनऊ बैठक में दोनों दल फिर एक हो गये और होम रूल आंदोलन की शुरुआत हुई जिसके तहत ब्रिटिश राज में भारत के लिये अधिराजकीय पद (अर्थात डोमिनियन स्टेटस) की माँग की गयी।

परन्तु 1915 में गाँधी जी के भारत आगमन के साथ कांग्रेस में बहुत बड़ा बदलाव आया। चम्पारण एवं खेड़ा में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जन समर्थन से अपनी पहली सफलता मिली। 1919 में जालियाँवाला बाग हत्याकांड के पश्चात गाँधी के मार्गदर्शन में कांग्रेस कुलीन वर्गीय संस्था से बदलकर जनसाधारण की संस्था बन गयी। तत्पश्चात् राष्ट्रीय नेताओं की एक नयी पीढ़ी आयी जिसमें सरदार वल्लभभाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू, डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद, महादेव देसाई एवं सुभाष चंद्र बोस आदि शामिल थे। गाँधी के नेतृत्व में प्रदेश कांग्रेस कमिटियों का निर्माण हुआ ।कांग्रेस में सभी पदों के लिये चुनाव की शुरुआत हुई एवं कार्यवाहियों के लिये भारतीय भाषाओं का प्रयोग शुरू हुआ। कांग्रेस ने कई प्रान्तों में सामाजिक समस्याओं को हटाने के प्रयत्न किये। जिनमें छुआछूत, पर्दाप्रथा एवं मद्यपान आदि शामिल थे।

राष्ट्रव्यापी आंदोलन शुरू करने के लिए कांग्रेस को धन की कमी का सामना करना पड़ता था। गांधीजी ने एक करोड़ रुपये से अधिक का धन जमा किया और इसे बाल गंगाधर तिलकके स्मरणार्थ ₹तिलक स्वराज कोष ₹का नाम दिया। चार आना का नाममात्र सदस्यता शुल्क भी शुरू किया गया था। 1947 में भारत की स्वतन्त्रता के बाद से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भारत के मुख्य राजनैतिक दलों में से एक रही है। इस दल के कई प्रमुख नेता भारत के प्रधानमन्त्री रह चुके हैं। जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, नेहरू की पुत्री इन्दिरा गाँधी एवं उनके नाती राजीव गाँधी इसी दल से थे। पूर्व भारतीय प्रधानमन्त्री डॉ॰ मनमोहन सिंह भी इसी दल से ताल्लुक रखते हैं।कांग्रेस एक नागरिक राष्ट्रवादी पार्टी हैं, जो एक प्रकार के राष्ट्रवाद का अनुसरण करती है , जो आज़ादी, सहिष्णुता, समानता और वैयक्तिक अधिकारों जैसे मूल्यों का समर्थन करता है। स्वतंत्रता के बाद से आज तक कांग्रेस ने ही अधिकांशतया देश को संभाला है और इस कार्य में उसने पूरे समर्पण के साथ काम किया है। स्वतंत्रता के बाद भारत को एक बिखरी अर्थव्यवस्था, व्यापक निरक्षरता और चौंकाने वाली गरीबी का सामना करना पड़ा।समकालीन अर्थशास्त्रियों ने भारत के आर्थिक विकास के इतिहास को दो चरणों में विभाजित किया है झ पहला आजादी के बाद 45 साल का और दूसरा मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था के दो दशकों का। पहले के वर्षों में मुख्य रूप से अर्थव्यवस्था के आर्थिक उदारीकरण के उन उदाहरणों से चिह्नित किया गया था जिसमें अर्थपूर्ण नीतियों की कमी के कारण आर्थिक विकास स्थिर हो गया था। भारत में उदारीकरण और निजीकरण की नीति की शुरूआत से आर्थिक सुधार आया है। एक लचीली औद्योगिक लाइसेंसिंग नीति और एक सुगम एफडीआई नीति की वजह से अंतरराष्ट्रीय निवेशकों से सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ देना शुरू कर दिया। 1991 के आर्थिक सुधारों के प्रमुख कारक एफडीआई के कारण भारत के आर्थिक विकास में वृद्धि हुई, सूचना प्रौद्योगिकी को अपनाने से घरेलू खपत में वृद्धि हुई और यह आर्थिक सुधारों का प्रमुख कारक ?फ़डीआई कांग्रेस के ही अर्थशास्त्री पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह की ही देन है देश की सेवा क्षेत्र में प्रमुख विकास, टेली सेवाओं और सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा हुआ है। दो दशक पहले शुरू हुई यह प्रवृत्ति सबसे अच्छी है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में अपनी टेली सेवाओं और आईटी सेवाओं को आउटसोर्स करना जारी रखा है। सूचना प्रौद्योगिकी के कारण विशेषज्ञता के अधिग्रहण ने हजारों नई नौकरियां दी हैं, जिससे घरेलू खपत में वृद्धि हुई है और स्वाभाविक रूप से, माँगों को पूरा करने के लिए अधिक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश हुआ है।वर्तमान समय में, भारतीय कर्मचारियों के 23% सेवा क्षेत्र में कार्यरत हैं जबकि यह प्रक्रिया 1980 के दशक में शुरू हुई। 60 के दशक में, इस क्षेत्र में रोजगार केवल 4.5% था। केंद्रीय सांख्यिकी संगठन के अनुसार, 2008 में सेवा क्षेत्र में भारतीय जीडीपी का 63% हिस्सा था और यह आंकड़ा लगातार बढ़ता जा रहा है। 1950 के दशक से, कृषि में प्रगति कुछ हद तक स्थिर रही है। 20 वीं शताब्दी की पहली छमाही में इस क्षेत्र की वृद्धि दर लगभग 1 प्रतिशत हुई।स्वतंत्रता के बाद के युग के दौरान, विकास दर में प्रति वर्ष 2.6 प्रतिशत की कमी आई थी। भारत में कृषि उत्पादन के लिए, कृषि उत्पादन में वृद्धि और अच्छी उपज वाली फसल की किस्मों की शुरूआत की गई। इस क्षेत्र में आयातित अनाज पर निर्भरता समाप्त करने का प्रबंध किया गया। यहाँ उपज और संरचनात्मक परिवर्तन दोनों के संदर्भ में प्रगति हुई है।शोध में लगातार निवेश, भूमि सुधार, क्रेडिट सुविधाओं के दायरे का विस्तार और ग्रामीण बुनियादी ढाँचे में सुधार कुछ अन्य निर्धारित कारक थे, जो देश में कृषि क्रांति लाए थे। देश कृषि–बायोटेक क्षेत्र में भी मजबूत हुआ है। राबोबैंक की रिपोर्ट से पता चलता है कि पिछले कुछ सालों से कृषि–जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र 30 प्रतिशत बढ़ गया है। **शेष अगले पेज पर**

खत्म हो जाएंगे मिटाने....

देश के अनुवांशिक रूप से संशोधित / प्रौद्योगीकृत फसलों का प्रमुख उत्पादक बनने की भी संभावना है। भारतीय परिवहन नेटवर्क दुनिया के सबसे बड़े परिवहन नेटवर्कों में से एक बन गया है, जिसकी सड़कों की कुल लंबाई 1951 ई0 में 0.399 मिलियन किलोमीटर थी जो जुलाई 2014 में बढ़कर 4.24 मिलियन किलोमीटर हो गई। इसके अलावा, देश के राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई 24,000 किलोमीटर (1947–69) थी, सरकारी प्रयासों से (2014) राज्य राजमार्गों और प्रमुख जिला सड़कों के नेटवर्क का 92851 किलोमीटर विस्तार हो गया है, जिसने प्रत्यक्ष रूप से औद्योगिक विकास में योगदान दिया है।जैसा कि भारत को अपने विकास को बढ़ाने के लिए बिजली की आवश्यकता है, इसके कारण बहु–आयामी परियोजनाओं को चलाने से ऊर्जा की उपलब्धता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। आजादी के लगभग सात दशकों के बाद, भारत एशिया में बिजली का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। 1947 में 1,362 मेगावाट से बिजली की उत्पादन क्षमता 2004 तक बढ़कर 1,13,506 मेगावाट हो गई है। कुल मिलाकर, 1992–93 से 2003–04 तक भारत में बिजली उत्पादन 558.1 बीयूएस से 301 अरब यूनिट (बीयूएस) बढ़ गया है। जब ग्रामीण विद्युतीकरण की बात आती है, तो भारत सरकार (2013 के आंकड़ों के अनुसार) 5,93,732 गाँवों को बिजली उपलब्ध कराने में कामयाब रही है, जब कि 1950 में 3061 गाँवों को बिजली प्राप्त थी। व्यापक निरक्षरता से खुद को बाहर निकालकर, भारत ने अपनी शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर के समतुल्य लाने में कामयाबी हासिल कर ली है। आजादी के बाद स्कूलों की संख्या में आकस्मिक वृद्धि देखी गई। संसद ने 2002 में संविधान के 86 वें संशोधन को पारित करके 6–14 साल के बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा का मौलिक अधिकार बनाया।

स्वतंत्रता के बाद भारत की साक्षरता दर 12.02% थी जो 2011 में बढ़कर 74.04% हो गई। यह क्षेत्र भारत की प्रमुख उपलब्धियों में से एक माना जाता है जिससे मृत्यु दर में कमी आयी है। जहाँ 1951 में जीवन प्रत्याशा 37 वर्ष थी, 2011 तक लगभग दोगुनी होकर 65 साल हो गई। 50 के दशकों के दौरान हुई मौतें में शिशु मृत्यु दर भी आधे से नीचे आ गई है। मातृ मृत्यु दर में भी इसी तरह का सुधार देखा गया है।एक लंबे संघर्ष के बाद, भारत को अंततः एक पोलियो मुक्त देश घोषित कर दिया गया। पाँच साल से कम उम्र के बच्चों में कुपोषण, 1979 में 67% से घटकर 2006 में 44% हो गया। सरकार के प्रयासों की वजह से 2009 में तपेदिक मामलों की संख्या घटकर 185 पर पहुँच गई। एचआईवी संक्रमित लोगों के मामलों में भी कमी आयी है। सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय (सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 6%) बढ़ने के अलावा, सरकार ने 2020 तक सभी के लिए 'हेल्थकेयर' सहित महत्वाकांक्षी पहलों की शुरुआत की है और सबसे कम आय वाले समूह के तहत आने वाले लोगों को मुफ्त दवाओं के वितरण का शुभारंभ किया है।

स्वतंत्र भारत ने वैज्ञानिक विकास के लिए अपने मार्ग पर आत्मविश्वास बढ़ाया है। इसका कौशल महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के क्रमिक स्केलिंग में

आनंद शंकर कांग्रेस कार्यकर्ता
मोकामा विधानसभा

प्रकट हो रहा है। भारत अपनी अंतरिक्ष उपलब्धियों पर गर्व करता है, जो 1975 में अपने पहले उपग्रह आर्यभट्ट के शुभारंभ के साथ शुरू हुआ।और तब भारत की प्रधानमंत्री कांग्रेस की ही श्रीमती इंदिरा गाँधी जी थी ,तब से भारत एक अंतरिक्ष शक्ति के रूप में उभरा है जिसने सफलतापूर्वक विदेशी उपग्रहों का शुभारंभ किया है। मंगल ग्रह का पहला मिशन नवंबर 2013 में लॉन्च किया गया था, जो सफलतापूर्वक 24 सितंबर 2014 को ग्रह की कक्षा में पहुँच गया।भारत के दोनों परमाणु और मिसाइल कार्यक्रम आक्रामक रूप में है। इसके साथ–साथ देश की रक्षा शक्ति भी बढ़ी है। दुनिया की सबसे तेज क्रूज मिसाइल ₹ब्रह्मोस₹ को रक्षा प्रणाली में शामिल किया गया है जिसे भारत और रूस द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है। आजादी के छह दशक से अधिक होने के बाद, भारत अब परमाणु और मिसाइल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक स्वतंत्र बल का अधिकारी है।

क्या इतने योगदान के बाद भी हम यही कहेंगे कि कांग्रेस ने साठ सालों में देश के लिए कुछ नहीं किया है ?,क्या अब भी हमें कांग्रेस मुक्त भारत की सोचनी चाहिए ? वास्तव में आज की सरकार जो भी कर रही है उसकी नीव रखने वाली कांग्रेस है ।जैसे कांग्रेस आज विपक्ष में भाजपा का अनुसरण कर रही है ,वैसे ही भाजपा सत्ता में कांग्रेस का अनुसरण ही कर रही है। क्योंकि इन दोनों दलों ने इन इन जगहों पर ही अपने आदर्श स्थापित किये हैं। भाजपा का लम्बा अनुभव विपक्ष का है और कांग्रेस का सत्ता का ।इसलिए यह कहना कि कांग्रेस विपक्ष में गलत कर रही है ,तो भाजपा पर ही लांछन लगाना होगा क्योंकि कांग्रेस भाजपा के पद चिन्हों पर है ।

ऐसे ही जब यह कहा जाए कि भाजपा सत्ता में अच्छा कार्य कर रही है तो वास्तविक तारीफ कांग्रेस की है क्योंकि भाजपा कांग्रेस की ही नीतियों का पालन कर रही है ।नेहरू के सर बदनामी का ठीकरा फोड़ने वाले भाजपाई मोदी को पूजते हैं ,जबकि मोदी नेहरू का ही अनुसरण कर भारतीय जनता में लोकप्रिय होने का प्रयास कर रहे हैं ।

वास्तव में कांग्रेस देश में इतना काम कर चुकी है कि अब औरों का काम केवल उसके कार्यों को मंजिल तक पहुँचाने का ही रह गया है और इसके बाद भी कांग्रेस मुक्त भारत की बात करते इन्हें लाज नहीं आती ।सच्चाई तो यह है कि आज भारत और कांग्रेस एक दूसरे के पर्याय बन चुके हैं और यदि हम कांग्रेस मुक्त भारत की बात करते हैं तो हम अपने घर को अपने ही हाथों खत्म करने की बात करते हैं ।

कांग्रेस के साथ भारत की आज़ादी का इतिहास जुड़ा है ।इसको समाप्त करना आजादी के संघर्ष को समाप्त करने जैसा है। लोकतंत्र में चुनाव का होना महत्वपूर्ण है। हार–जीत उसका एक हिस्सा हो सकता है। कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को न तो हताश होने की आवश्यकता है,न ही हीन भावना का शिकार होने की। उन्हें पूरे दमखम से पार्टी की मजबूती के लिए काम करने की जरूरत है।

सत्ता में आने के लिए भाजपा ने लंबा इंतजार किया। शुरूआती कई वर्षों तक तो वह कम्युनिस्टों से भी पीछे रही। एक दौर था जब लोकसभा में इसके मात्र दो सदस्य थे। कांग्रेस तो फिर भी आगे है।हाल ही में कई राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम कांग्रेस के लिए निराशाजनक रहे हैं। इससे घबराना नहीं है। कांग्रेस नेतृत्व को अपने कार्यकर्ताओं का मनोबल हर हाल में बढ़ाए रखना चाहिए।

कांग्रेस को इस बात का आत्ममंथन जरूर करना चाहिए कि बदलते दौर की राजनीति में उसे कैसे फिट बैठना है। कांग्रेस की असली पूंजी उसके अपने कार्यकर्ता हैं। नेता तो अपने स्वार्थ के लिए आते–जाते रहते हैं। कांग्रेस के कार्यकर्ता अपनी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से पार्टी के लिए लगे रहते हैं। सीमित संसाधनों के बीच वे देश और दुनिया की सबसे बड़ी डिजिटल और हाई–टेक पार्टी भाजपा से लोहा लेते रहते हैं।उन कार्यकर्ताओं से संवाद की जरूरत है।

याद रखिए,इस पार्टी को विपरीत परिस्थितियों में अड़ना आता है और लड़ना भी।

कहा भी गया है – जिंदगी की यही रीत है,हार के बाद ही जीत है।

आज दांडी मार्च को हुए 93 वर्ष

जब महात्मा गांधी जी ने कहा था– मैं ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला रहा हूं

पटना।कांग्रेस दर्पण

आज से 93 वर्ष पहले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के नमक उत्पादन पर एकाधिकार को खत्म करने के दांडी मार्च का आहान किया था इस मार्च की शुरुआत 12 मार्च 1930 को साबरमती से हुई थी जो 6 अप्रैल को दांडी पहुंची थी । उसी दिन महात्मा गांधी ने अंग्रेजो के बनाए नमक कानून को तोड़ा था।

दांडी मार्च के बाद देश भर में असहयोग आंदोलन की शुरुआत हुई थी, जो 1934 तक चला था। इस मार्च के दौरान महात्मा गांधी अपने 78 अन्य सहयोगियों के आज से 93 वर्ष पहले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के नमक उत्पादन पर एकाधिकार को खत्म करने के लिए दांडी मार्च का आह्वान किया था। जिसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अहम पड़ाव माना जाता है। इस दांडी मार्च की सुरुवात 12 मार्च, 1930 को साबरमती आश्रम से हुई थी। जो 6 अप्रैल को दांडी पहुंची थी। उसी दिन महात्मा गांधी ने सुबह 6:30 बजे अंग्रेजों के बनाए नमक कानून को तोड़ा था।

दांडी सत्याग्रह मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों द्वारा लागू नमक कानून के विरुद्ध सविनय कानून को भंग करना था। बता दें कि, इससे पहले अंग्रेजी शासन में भारतीयों को नमक बनाने का अधिकार नहीं था। भारतियों को इंग्लैंड से आने वाला नमक का ही इस्तेमाल करना पड़ता था। यही नहीं, अंग्रेजी सल्तनत ने नमक पर कई गुना कर भी लगा दिया था। नमक मानवी जीवन के लिए आवश्यक वस्तु है,जिसके लिए नमक पर लगा कर को हटाने के लिए गांधी ने यह सत्याग्रह चलाया था।

70 हजार से अधिक लोगों को हुई थी जेल

12 मार्च को शुरू हुआ यह मार्च लगभग 25 दिन बाद 6 अप्रैल 1930 को 241 मील की दूरी तय कर यह यात्रा दांडी पहुंची था। इसक पश्चात महात्मा गांधी ने कच्छ भूमि में समुद्र तल से एक मुट्ठी नमक उठाकर अंग्रेजी हुकूमत को सशक्त संदेश दिया था। गांधी जी ने आज के दिन नमक हाथ लेकर कहा था कि, मैं ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला रहा हूं। जिसके बाद यह आंदोलन करीब एक साल तक चला। इस आंदोलन में सहभागी 70,000 से भी अधिक भारतीयों को गिरफ्तार किया गया था। वहीं साल 1931 में राष्ट्रपिता गांधी और तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच समझौता हुआ और इस सत्याग्रह को खत्म किया गया।लेकिन इसके बाद भारत में आज़ादी की चिंगारी भड़क चुकी थी। इस आंदोलन के बाद 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' की शुरुआत हुई। जिसने संपूर्ण देश में अंग्रेजी हुकूमत के विरोध में व्यापक जन संघर्ष को जन्म दिया। राहुल गांधी के नेतृत में भारत जोड़ो यात्रा और दांडी यात्रा दोनो मार्च कुछ सामान्य सूत्र साझा करते है दोनों मार्च कुछ सामान्य सूत्र साझा करते हैं, जैसे कि सत्ताधारी शासनों की सांप्रदायिक कथा, घृणा का प्रसार और आय असमानता।

राहुल गांधी के नेतृत्व में 7 सितंबर, 2022 को कन्याकुमारी से शुरू हुई भारत जोड़ो यात्रा 150 दिनों से अधिक पैदल चलकर 3,750 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद जम्मू–कश्मीर में समाप्त हुआ था।यह हर मायने में अभूतपूर्व है, क्योंकि भारत के इतिहास में कभी भी किसी ने अपनी एकता की रक्षा के लिए इस तरह की यात्रा (पैदल यात्रा) नहीं की है।

महात्मा गांधी द्वारा 12 मार्च, 1930 को साबरमती आश्रम से शुरू किया गया था और 6 अप्रैल को दांडी में समाप्त हुआ था, जब उन्होंने एक चुटकी नमक उठाया था। ब्रिटिश शासन द्वारा लगाए गए नमक कानून को तोड़ना जिसने भारतीयों को समुद्र के पानी से नमक बनाने पर रोक लगा दी थी।

आज राहुल गांधी ने बार–बार आय असमानता के मुद्दे को उठाया और उस संदर्भ में, उन्होंने अडानी और अंबानी की संपत्ति में तेजी से वृद्धि और आम लोगों की घटती आय का उल्लेख किया। यह ध्यान देने योग्य बात है कि उन्होंने जो कहा वह 1930 में ब्रिटिश शासन के दौरान महात्मा गांधी द्वारा आय असमानता के खुलासे के समानांतर चलता है। यह वायसराय लॉर्ड इरविन को संबोधित उनके 2 मार्च, 1930 के पत्र में प्रकट हुआ था। उन्होंने लिखा है कि एक औसत भारतीय की दैनिक आय केवल 12 पैसे थी, ब्रिटिश वायसराय की दैनिक आय 700 रुपये थी और एक औसत ब्रिटिश प्रजा और उस देश के प्रधान मंत्री के लिए यह आंकड़ा 2 रुपये और 180 रुपये था। क्रमश। महात्मा गांधी ने आम लोगों के ज्ञान में लाया था।

महात्मा गांधी की उन पंक्तियों में सन्निहित भावना को राहुल गांधी के शब्दों में पर्याप्त रूप से

प्रदर्शित किया गया था, जिन्होंने 24 दिसंबर को लाल किला में अपने भाषण में कहा था कि कॉरपोरेट्स द्वारा नियंत्रित और नरेंद्र मोदी शासन द्वारा समर्थित टीवी चैनल 'हिंदू' प्रसारित करने में लगे हुए हैं। –मुस्लिम, हिंदू–मुसलमान' और आर्थिक रूप से पंगु हो चुके लोगों के वास्तविक मुद्दों को पूरी तरह काला करना

ऐतिहासिक दांडी मार्च की वह भावना परिलक्षित होती है जिसमें सभी समुदायों के लोग बड़ी संख्या में भाग ले रहे हैं और राहुल गांधी स्वयं इस मार्ग पर स्थित मंदिरों, मस्जिदों, चर्चों और गुरुद्वारों का दौरा कर रहे हैं। उनका यह वर्णन उनके लिए उनकी तपस्या है, गांधी के दांडी मार्च के उनके 'तीर्थयात्रा' के रूप में वर्णन का विचारोत्तेजक है।

दांडी मार्च असहमति व्यक्त करने, ब्रिटिश शासन से पूछताछ करने, अन्यायपूर्ण कानून का विरोध करने और सरकार को जवाबदेह ठहराने का एक चमकदार उदाहरण था।

राहुल गांधी ने भारत को एकजुट करने के लिए कन्याकुमारी से शुरू किया और नफरत की ताकतों का मुकाबला किया और उनके साथ एक वैचारिक संघर्ष किया।

-इंजीनियर मोहिउद्दीन खान